UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

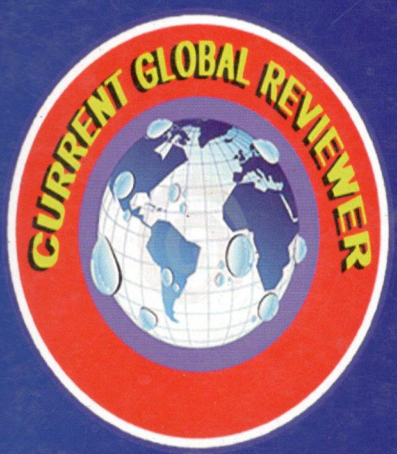

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

17-18-

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**

Issue X Vol II , Jan. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research Refereed Multidiciplanary Journal

Editor In Chief

Mr. Arun B. Godam

ISSUE X Volume II (Half Yearly) Nov. 2017 To Apr. . 2018

Published on Jan. 2018

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur, Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999

Email- hitechresearch11@gmail.com

SHAURYA PUBLICATION Latur

Publisher

Shaury Publication

Kapil Nagar, Latur

Contact- 8149668999

Rs. 400/-

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Chitta Ranjan Panda
P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous College , Cuttack – (Orissa)

B.J. Hirve
Dept. of botany
Vasant Mahavidyalaya, Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Pravin Diddeshwar Shete
Dept. of Zoology, Maharashtra Udaygiri Mahavidyalaya, Udgir, Dist. Latur

Maimanat Jahan Ara
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr U.V.Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. Hanumant Mane
R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Dr. Sachin Kadam
Dept. of Hindi
Nagarpalika Art D.J. Malpani Comm. & B.N. Sarda Sci. College,
Sangmner, Dist. Ahmadnagar (M.S.)

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**
Issue X Vol II, Jan. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

16	महिलांचा आर्थिक विकास आणि उद्योजकता	डॉ.सतीश बाबुराव डोंगे	70
17	ॲरिस्टॉटलच्या 'नैतिक सदगुण' संकल्पनेचा अन्वयार्थ	पंडगे संतोष रमेशराव	74
18	ग्रामीण साहित्य संकल्पना व स्वरूप	प्रा. डॉ. हनुमंत तुकाराम माने	77
19	विद्यार्थ्यांच्या सृजनशीलतेचा विकासासाठी कार्यक्रमनिर्मितीचा अभ्यास	प्रा.मरेवाड पी.पी.	81
20	स्त्री उत्थानातील डॉ.बाबासाहेब आंबेडकराच्या कार्य व चळवळीचे योगदान	डॉ.पी.जी. राठोड	86
21	नव्वदोत्तरी स्त्रीवादी कथालेखनातील स्त्रीजीवन	प्रा.डॉ.लक्ष्मण ना.वाघमारे	89
22	'अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहीत्यातील आंबेडकरी विचार'	डॉ. आर. एस. पारवे	92
23	पश्चिम महाराष्ट्र का लिगांयत समाज : एक अध्ययन	डॉ. लक्षटे रत्नाकर बाबुराव	97
24	''उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटक और रंगमंच।''	डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी	100
25	योगदर्शनातील मानसशास्त्र	प्रा. भुसारे जी.एन.	103

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018	**UGC Approved**	**ISSN : 2319 - 8648**
Issue X Vol II, Jan. 2018	**Sr. No. 64310**	**Impact Factor : 2.143**

''उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटक और रंगमंच।''

डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी
पदव्यूत्तर हिंदी विभाग,दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

----------(24)----------

आधुनिक काल में हिंदी नाटक साहित्य का आरंभ भारतेंदु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। उन्ही के प्रयासों से हिंदी नाटक को पहलीबार रंगमंच उपलब्ध हुआ। स्वयं भारतेंदुजी ने ही अथक प्रयासों से नाटक साहित्य के इतिहास में उनकी अनुपम देन के कारण ही इस युग को भारतेन्दु युग के नाम से अभिहित किया जाता है। ''प्राचीन और नवीन के संक्रमण काल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र भारत वासियों के नवोदित आकांक्षाओं और राष्ट्रीयता के प्रतीक थे, वे भारतीय नवोत्थान के एक अग्रदूत थे। मध्ययुगीन पौराणिक वातावरण से जीवन और साहित्य को बाहर निकालकर उन्हें आधुनिक रुप प्रदान करने की उन्होंने सतत चेष्टा की।''[१] इस युग में उन्हीं के अगाध परिश्रम से आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य का जन्म हुआ। उनके पूर्व हिंदी में रंगमंच और नाटकों का अभाव ही था। उस समय रासलिलाएँ, राम लीलाएँ, पारसी थियटर आदि जनता के मनोरंजन के साधन बने हुए थे। भारतेंदु और उनके समकालीन नाटककारों की दृष्टि में वे भ्रष्ट थे। रंगमंच का वे सही ढंग से प्रयोग नहीं कर रहे थे। वेसे तो नाटक की सफलता का परिक्षण रंगमंच पर ही होता है क्यों कि रंगमंच युग विशेष की जनरुचि और तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था के आधार पर निर्मित होता है। 'रंगमंच के व्यवस्थापकों एवं कलाकारों को नाटक रचना के साहित्यिक एवं कलागत मूल्यों के साथ साथ रंगमंच के संस्थापकों की रुचि का भी ध्यान रखना पडता है। अत: नाटक का स्वरुप प्रत्येक युग में परिवर्तित होते रहता है।[२] इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि रंगमंच और नाटक साहित्य का ऐसा रुप है जो युगानुसार परिवर्धित होकर नए रुप को धारण करता जाता है। वैसे नाटक के संदर्भ में यह माना जाता है कि नाटक एक अनुकरण की कला है तो अभिनय की प्रेरणा का स्त्रोत जीवन का अनुकरण ही है। इसीलिए तो अभिनय ही नाटक का प्राण है। प्राचीन भारतीय नाट्यशास्त्रीय ग्रंथो में काव्य का अर्थ दृश्य काव्य से ही माना जाता था। इस विषयपर आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में विस्तार से लिखा भी है। काव्य की व्याख्या करते हुए भरतमुनि कहते है कि काव्य 'नृत्य योज्यम' है अर्थात नृत्य के उपयुक्त है। इसका सीधा अर्थ यही है कि रंगमंच के अनुकूल नाटक नाटक के होने की जो बात आज कही जाती है उसका कहीं न कहीं सम्बन्ध प्राचीन नाटक परंपरा से है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि आज अभिनय और नृत्य दोनों स्वतंत्र अलग अलग कला के रुप है। इसका सीधा सा अर्थ है, ''प्राचीन काल में जहाँ अभिनय को नृत्य का एक अंग माना जाता था, आज नाटक में नृत्य को अभिनय का अंग माना जाता है और उसका स्थान भी गौण है।''[३]

तथ्य तो यह है कि विकसित और सुविधाओं से युक्त रंगमंच न हो तो नाटक रचना भी सफल रुप से मंचित नहीं हो सकती। सफल नाटक रचना के लिए रंगमंच की उपयुक्तता ही हो। रंगमंच की सुविधाओं को दृष्टि में न रखकर नाटक रंगमंच पर खेले जायेंगे तो निश्चित ही ऐसे नाटक असफल ही होंगे। नाटककार को यह ध्यान में रखना होगा कि रंगमंच की उपेक्षा करके सफल नाटक लिखे नही जा सकते क्योंकि ऐसे नाटकों में अभिनय की दृष्टि से अनेक कमियाँ रह जाने की पुरी संभावना रहती है। हिंदी नाटकों के संदर्भ में हम कह सकते है कि जिस समय व्यावसायिक रंगमंच ऱ्हास की ओर जा रहा था तभी अच्छे नाटककारों का अविर्भव हुआ। इस समय व्यावसायिक रंगमंच को ध्यान में रखकर जो नाटक लिखे जा रहे थे वे नाटक कला और काव्यकला की दृष्टि से अनेक कमियों से परिपूर्ण थे पर रंगमंच की सुविधा को सबकुछ माननेवाले कम्पनी नाटकवाले उसकी ओर ध्यान नहीं देते थे तो दूसरी ओर ऐसे नाटककार थे जो रंगमंचीय नाटकों के उपरी दिखावट और प्रदर्शन की वृत्ति से आत्याधिक पिछडे हुए थे। वे

निर्देशक, अभिनेता, रंगशिल्पी और दर्शक तक पहूँच कर सम्पूर्ण होती है। इस बुनियादी सत्य की उपेक्षा अथवा अज्ञानता ने हिंदी रंगमंच की जैसे कमर ही तोड डाली। उस मत से यही स्पष्ट होता है कि जिस तरह पारसी रंगमंच के नाट्य रचनाकार पश्चिम के रंगमंच की नकल तक ही सीमित रहे, उसके मूल रुप को नहीं समझ सके वैसे ही तथा कथित बध्दिजीवी संस्कृत नाट्यकला के मूल रुप को नहीं समझ सके वैसे ही तथा कथित बुध्दिजीवी संस्कृत नाट्यकला के मूल रुप से अनभिज्ञ ही रहे। उसकी आत्मातक वे पहूँच नही सके। इस परिप्रेक्ष में भारतेंदुजी का प्रादुर्भाव विशेष महत्व रखता है। वे ही इस युग के एक मात्र ऐसे नाटककार है जिन्होंने पारसी और हिंदी ंगमंच के बीच खडी दिवार को तोडा है। उन्होंने अपने अथक प्रयासों से इस व्यवधान को समाप्तकर दोनों धाराओं के बीच समन्वय स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। यह उनकी अद्भूत प्रतिभ का ही कमाल था। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में लोकमंच की बडी संपन्न परंपरा रही है। नौटंकी, रामलीला, स्वांग, कृष्णलीला, भरत आदि के रुप में यह लोक रंगमंच सर्व सामान्य जनता में बडा ही लोकप्रिय रहा। इसमें मात्र लोक रंजन और धर्म से सम्बन्धित उपदेशों का ही समावेश हुआ था। अर्थात इसका रुप बडा सीमित था। किसी बडे व्यापक या उदात्त विषय को लेकर ये लोक रंजनात्मक लीलाएँ नही होती थी। साथ ही ये सभी चीजे परंपराप्रिय थी। कहीं कही अवश्य ही इन प्रथाओं में समसामायिकता का तत्व दिखाई देता है और ये लोककला ऐसे स्थलों पर बडी जीवंत हो उठती थी जिसका साक्षात उदाहरण बंगाल में प्रचलित लोकनाटफ श्यात्राश के संदर्भ हुआ जिसके परिणाम स्वरुप एक नई नाटफ परंपरा की शुरुआत हुई।

भारतेंदुजी के नाटक श्अंधेर नगरीश से एक नई परंपरा की शुरुआत हुई। श्अंधेर नगरीश रंगमंच, रुपबंध, भाषा सभी दृष्टि से हिंदी की नितांत मौलिक रचना है पर भरतेंदु की यह परंपरा आगे विकसित नहीं हो सकी। ऐसी स्थिति में भी पारसी रंगमंच बराबर विकसित होते रहा क्यों कि पारसी रंगमंच ने धर्म, समाज जागरण और राष्ट्रीय चेतना जौसे विषयों को लेकर रंगमंचीय नाटक तौयार किए। पारसी थियटर ने यह इसलिए नही किया कि इन विषयों के प्रति उसमें आस्था थी अपितु इसलिए कि उस युग का प्रेक्षक या दर्शक इन्ही विषयों के प्रति आकर्षित हुआ था जिसका पुरा लाभ पारसी रंगमंच ने उठाया। पर पारसी रंगमंच की विकास यात्रा भी कम त्रासदीपूर्ण नहीं रही क्यों कि अंग्रेजी शासन का भय तो उन्हें भी था। वे जानते थे कि राष्ट्रभक्ति या देशभक्ति अंग्रेजी शासन को रास नहीं आयेगी। इसलिए उन्होंने भाषा के ऐसे माध्यम को अपनाया जो सीधे अंग्रेजी शासकों की पकडे मे नही आ सकते थे। एक और उन्हे हिंदी भाषा आम जनता की भावना को ध्यान में रखना पडता था तो दूसरी ओर अंग्रेजी शासकों से भी यश था। हिंदी भाषा और राष्ट्रीय चेतना से जुडने के बाद ही पारसी रंगमंचियों ने ऐसे रचनाकारों को अपने मंच से जोड लिया जो हिंदू धर्म, इतिहास और पुराण को अपनी भाषा में सहजता से व्यक्त करते थे। उस समय नारायणप्रसाद बेताब ऐसे रचनाकार थे जिनकी हिंदी भाषा, पुराण–शास्त्र, इतिहास और राष्ट्रीय के गहरी आस्था थी और जो हिंदी के साथ साथ अरबी–पारसी का भी ज्ञान रखते थे। बेताब की उर्दू रचनाएँ उस युग में बहुत प्रसिध्द हुई। नारायण प्रसाद बेताब की प्रतिभा का पूरा लाभ पारसी रंगमंच ने उठाया।

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

SHAURYA PUBLICATION
Latur
Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in